प्रश्न - पेपर ३७ ता. २५-१२-८५

'हैम सं. प्र. म.' पाठ १३ थी ३० मार्क्स १००

प्र. १ नीचेना प्रश्नोना जवाब आपो । गमे ते १५ ३७½ मार्क्स

(१) कया वर्ण पछी कया वर्णो आवे तो आदिव्यंजननो शुं फेरफार थाय ?

(२) द्विरुक्तिमां थता मात्र व्यंजनना फेरफार दृष्टांत साथे लखो ।

(३) धातुना इ वर्ण नो य् क्यारे थाय तथा इय् क्यारे थाय ? ते सदृष्टांत लखो।

(४) ऋकारान्त अनिट् धातुओ केटला ते जणावी ऋकारान्त अनिट् धातु लखो ।

(५) पाठ १७ नियम - ३, तथा नियम ७ शा माटे ?

(६) पाठ १७ नि. ८, १२ शा माटे ते जणावी आ नो ऐ क्यारे थाय ।

(७) अस्मादृक्, मित्रध्रुट्, ईदृक्षः शब्दनी व्युत्पत्ति लखवी अर्थ लखो ।

(८) च्वि प्रत्यय क्यारे थाय ते जणावी ते प्रत्यय पर छतां थतां फेरफार लखो।

(९) बंहिष्ठः, वृन्दीयान् तथा स्थविष्ठः ना विग्रहो लखवी अर्थ लखो ।

(१०) १७, ८३, ७८, ८२ माटे संख्यावाचक शब्दो लखो ।

(११) स्वरादि संख्यापूरक प्रत्ययो जणावी 'तम' ज प्रत्यय कोने थाय ते लखो ।

(१२) परोक्षाना प्रत्ययो कित् क्यारे थाय ? कित् थवाथी शुं फायदो ते जणावी
पाठ २५ नि. १० शा माटे ?

(१३) शुं परोक्षाना प्रत्ययो पर छतां गुण थाय ? थाय तो क्यारे ? ते दृष्टांत साथे लखो।

(१४) ट्वृत् नो अर्थ लखी दीर्घस्वर वधु के गुरु स्वर ? ते जणावी आम् ने तिववत्
करवानुं शुं कारण ?

(१५) अद्य. मां कर्मणि रूपो कया कया प्रकारमां थाय ? ते जणावी १ला प्रकारमां
नित्यवृद्धि कया धातुमां थाय ?

(१६) सिच् कित् क्यारे थाय ? ते जणावी ३ जा प्रकारमां आवतां ष् अंतवाला
धातुओ लखो ।

(१७) ६ ठ्ठा प्रकारमां तथा पांचमा प्रकारमां विकल्पे आवतां धातुओमां विकल्पपक्षे
कयो प्रकार थाय ते दृष्टांत साथे लखो।

प्र. २ (अ) नीचेना धातुओना मांग्या प्रमाणे रूपो लखो । १५ मार्क्स

(१)	हन्	कर्तरि -	कर्मणि	३ पु.	परोक्षा.	अद्यतन.	आशी.
(२)	ग्लुञ्च्	"	"	१ पु.	"	"	"
(३)	अनु + इ	"	"	२ पु.	"	"	"
(४)	धू	"	"	२ पु.	"	"	
(५)	पॄ	"	"	३ पु.	"	"	"

(ब) नीचेना शब्दोना मांग्या प्रमाणे रूपो लखो। गमे ते 5 — १० मार्क्स
(१) पॄ - परोक्ष कृदन्त - त्रणे लिंग संबोधन (२) गुरुद्रुह् - 5-7 वि.
(३) आशिष् - 1-3-7 (४) शकृत् - २-7
(5) जरा - 1-6-7 (6) तिर्यच् - त्रणे लिंग बीजी विभक्ति

प्र.3 नीचेनी खाली जगा पूरो। गमे ते - 5 — 7½ मार्क्स
(१) था धातुनुं संबंधक भूत (स्थित्वा) तथा आस् नु व.कृ. (आसीन) थाय छे।
(२) उशनस् नुं संबोधन —— ज्यारे दुह् धातुनु तव्य प्रत्ययान्त रूप (दोग्धव्यम्) थाय छे
(३) द् कारान्त अनिट् धातुओ (४) तथा ह्रस्व स्वरान्त सेट् धातु (१०) छे।
(४) सदृश नुं स्त्री लिंग (सदृक्षा) थाय छे ज्यारे ततर नुं नपुं. ए.व. (ततरद्) थाय छे।
(5) वृद्ध नुं आधि-दर्शक स्त्री (ज्यायसी) ज्यारे दूर नुं इमन् प्रत्ययान्त अंग X थाय छे।
(6) (पद्) धातुमां अद्य-कालमां कर्त्तरिमां नित्य ञिच् लागे छे।

प्र.४ नीचेना धातुओं अद्यतनमां कया प्रकारमां आवे ते जणावी उपु. ए.व. नुं रूप लखो
गमे ते - 7 — १० मार्क्स
स्तु, जॄ, शा, श्वि, रूच्, त्रप, ट्धे, दृप्

प्र.5 (अ) नीचेना वाक्योने संधिमुक्त करी अर्थ लखो — १० मार्क्स
(१) आगतः पाण्डवाः सर्वे दुर्योधन समीहया।
तस्मै गां च सुवर्णं च विविधानि च रत्नानि ।१।
(२) एकोनाविंशतिर्नार्यः स्नानार्थं सरयूं गताः
एको व्याघ्रेण भक्षितो, विंशतिः पुनरायाताः ।२।
(३) तेषां चतुर्णां चतस्रः पुत्र्यो यूयं भविष्यथ
मर्त्यत्वमीयुषा भावी तत्र वोऽनेन सङ्गमः ।३।

(ब) नीचेना वाक्यों संस्कृत साथे लखो। गमे ते 3 — १० मार्क्स
(१) कुमारपाल महाराजाए निर्माण करेल (प.कृ.) सुन्दर जिनालयथी शोभती आपृथ्वीमां अनेक महासंतोए जन्म धारण करेल छे (अद्य.) अने सदुपदेश द्वारा अनेक दुर्जनोने सुजन जेवा करेल छे (च्वि)
(२) आपणने कोई पण दुःख आपतुं नथी, पूर्वभवोमां अशुभयोगो द्वारा प्राप्त करेल (प.कृ.) अनंत कर्मो ज उदयने पामीने असाता वि. आपणने आपे छे।
(३) वर्तमान कालमां चिंतन पूर्वकनो अभ्यास लोपातो जाय छे तेथी ज महापुरूषो ए गुंथेला (प.कृ.) अद्भूत शास्त्र ग्रन्थोना रहस्य पामी शकाता नथी, अने तेथी जीवनमां प्रगति के उल्लास देखातो नथी।
(४) आ वर्षमां मध्यमा पूर्ण कराशे। त्यारपछी उत्तमाना अभ्यासनो आरंभ करीशुं, उत्तमानी साथे प्राकृत नो अभ्यास तथा अन्य ग्रन्थोना महान् अभ्यासनी भावना छे। हे सरस्वति मा! तुं अमारी ते भावनाने पूर्ण कर।